

संचिता

गुवाहटी, असम

तोते की कहानी

आओ, आपको आज सुनाएँ
तोते की एक कहानी।
हरा रंग और लाल होंठ हैं उसके,
गाता वह—मेरा जूता है जापानी।

जामुन का पेड़ घर था उसका,
पपीता उसका खाना।
मज़े से खाता, उड़ता-फिरता,
अपनी किस्मत पर बड़ा इतराता।

एक दिन वह पकड़ा गया,
सर्कस वालों के एक पिंजरे में।
अब दिनभर उसको गाना पड़ता,
जीवन के इस संघर्ष में।

दर्शक उसको खाना देते,
लाते सोने का पिंजरा।
पंख फड़फड़ाकर समझाता उनको—
आज़ादी ही अब जीवन का सपना।

कलम अपनी-अपनी

स्याही के बिन मोल नहीं जिसकी,
वह कलम है हम सबकी।
तलवार से भी बलवान हो जाए,
जब सही हाथों में पड़ जाए।

रंग-बिरंगी कलमों से रचा जाता सपना,
सपनों को साकार करने में प्रयोग होती
कलम अपनी-अपनी।

कवि की तलवार है कलम,
समाज की निद्रा भंग करने में कार्यरत है कलम।
अनपढ़ के लिए बोझ है कलम,
प्लास्टिक के टुकड़े समान है कलम।

कलम से ही प्रेमियों के रिश्ते जुड़े,
कलम से ही पापियों के प्राण छूटे।
कलम की माया अपरंपार,
कलम ने उठाया विश्व का भार।